NH Debate - 33

‘सत्ता विकेंद्रीकरण "पेरिस कम्यून" वालों से सदियों पहले सन 643 CE में खापों ने भारत में सामाजिक व्यवहार में उतार दिया था!’

आजकल "आम पार्टी" द्वारा सत्ता विकेंद्रीकरण के फॉर्मूले को लागू करने के कारण चहुँ और चर्चा चल रही है कि यह फार्मूला कितना पुराना है| कई टी. वी. चैंनलों और अख़बारों में इस जोरों-शोरों से चर्चाएं गरम हैं| ऐसे ही एक कार्यक्रम देखा जिसका विश्लेषण नीचे कर रहा हूँ|

सत्ता विकेंद्रीकरण का 1871 'कार्ल-मार्क्स', 'पेरिस कम्यून', 'महात्मा गांधी' और अभी ताजा-ताजा 'आप पार्टी' वालों से भी पहले का सदियों पुराना रिकॉर्ड जानना चाहते हो तो भारत से बाहर जाने की जरूरत नहीं, प्राचीन खापों की कार्य-प्रणाली पढ़ लीजिये रवीश बाबू (माननीय एन. डी. टी. वी. वाले)| और ये कार्ल मार्क्स को कहाँ से घुसा दिया आपने इसमें, वो तो इस विचारधारा के थे ही नहीं?

और हाँ क्योंकि आप मीडिया वाले अक्सर 'खापोफोबिया' से ग्रसित रहते हैं इसलिए कृपया मेरा कमेंट पढ़ के मेरे आगे खापों के मीडिया स्टाइल वाले मनवांछित खूनी किस्से, तालिबानी रूप और दबंगई राग वाली ललितात्मक निबंधिता में मत ललिताने लग जाइयेगा| अगर ईमानदारी से सही में चीजें ढूंढ़ना चाहते हो तो मुझसे बतिया लीजियेगा|

बाकी हमार तथ्य का प्रस्तुति और दावे को ले के हम तनिक भी संकवा में नाहीं हूँ और ओतना ही गम्भीरवा मुद्रा में आपसे अनुरोधित हूँ कि आप जरा खापों की मूल परिभाषा और कार्य-प्रणाली जाईके देखइएगा| हम सिर्फ इत्तो ही कहु चाहत कि सत्ता विकेंद्रीकरण दुनिया में 1871 में ये आपके अनुसार वाले कार्ल-मार्क्सवा उ पेरिस कम्युनवा सर्वप्रथम नाहीं लात, उनका भी गुरुवा "खापन वाला" 643 में राजा हर्षवर्धनवा के संग ले आहि रहत|

तभी तो आप मीडिया वाला लोगन का इतना हमला और आपसे पहले अंग्रेजनवा और मुगलवा का कठिन बख्तवा में से भी निकल के ऐह आज भी जिन्दा खड़ा, वरना इन खापन के आगे ही कित्ता राजा-रजवाड़ा-सूरमा आवा और गवा पर ए खापन नाहीं हिल्ला कोन्हू से भी| वो काहे को नहीं हिला, ओ इ ही के वास्ते क्योंकि इनका कार्य-प्रणाली सत्ता विकेंद्रीकरण का धुरी पे टिका रहतबा| जिसका कि आपका "प्राइम टाइम" में भी एक बन्दवा दावा करी रहत कि सत्ता विकेंद्रीकरण से कार्य करने वाला तंत्र लम्बी आयु तक चलही|

काश! आप लोग हर अच्छी चीज को विदेश में जा के ढूंढ़ने की अपनी इन आदतों को छोड़ दें तो इस देश में ही आपको सब कुछ मिल जाए, पर पता नहीं कि आप लोग, "घर की मुर्गी हमेशा ही दाल के के बराबर समझते हो|

हमार कमजोर भोजपुरी के लिए हमका माफ़ी दई हो, बिहार के लाल्ला| और इह स्टाइल का भाषा में जवाब देने का लहजा हम आपकी ही फेसबुकिया भाषा से सीखा हू, रविशवा जी|

धनबाद|

Source: Prime Time Program of 19th December 2013 by N.D.T.V.

Phool Kumar Malik

Nidana Heights

Dated: 19/12/13